इकाई 12 आधुनिक युग में राष्ट्रीय भावनाओं के उदय के मुख्य कारण

इकाई की रूपरेखा

12.0 उद्देश्य

12.1 प्रस्तावना

12.2 उपनिवेशवाद और साम्राज्यवाद का विरोध

12.3 राष्ट्रवाद का उदय

12.4 औद्योगिक क्रांति और आधुनिकीकरण

12.5 मीडिया और संचार

12.6 शिक्षा और सामाजिक सुधार

12.7 सारांश

12.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

12.9 बोध/अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

12.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन से आप -

- आधुनिक युग में राष्ट्रीय भावनाओं के उदय के मुख्य कारणों को जानेंगे।
- राष्ट्रीय भावनाओं से सम्बन्धित प्रमुख घटनाओं के विषय में जानेंगे।
- राष्ट्रीय भावनाओं के उदय का विश्व पर प्रभाव को जानेंगे।
- भविष्य में राष्ट्रीय भावनाओं की क्या स्थिति हो सकती है इसको जानेंगे।

12.1 प्रस्तावना

आधुनिक युग में, राष्ट्रीय भावनाओं का उदय एक महत्त्वपूर्ण घटना रही है जिसने दुनिया को कई रूपों में प्रभावित किया है। यह भावना न केवल देशों के बीच एकता और गौरव का प्रतीक बन गई है, बल्कि राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक परिवर्तनों को भी जन्म देती है।

प्रिय अध्येताओ ! इस इकाई में, हम आधुनिक युग में राष्ट्रीय भावनाओं के उदय के मुख्य कारणों का विश्लेषण करेंगे। जिनमें सर्वप्रथम कारण है -

12.2 उपनिवेशवाद और साम्राज्यवाद का विरोध

आधुनिक युग में राष्ट्रीय भावनाओं के उदय का प्रथम कारण था उपनिवेशवाद और साम्राज्यवाद का विरोध । 19वीं और 20वीं शताब्दी में, दुनिया भर के कई देशों ने

उपनिवेशवाद और साम्राज्यवाद के शोषण का सामना किया, जिनमें भारत भी एक था । उपनिवेशवाद का अर्थ है जब किसी एक देश के लोग किसी दूसरे देश पर कब्जा कर लेते हैं और वहाँ अपना शासन स्थापित कर लेते हैं। यह शासन आमतौर पर आर्थिक लाभ, शक्ति और प्रभाव बढ़ाने, या धार्मिक विचारों को फैलाने के लिए किया जाता है।[1]

15वीं से 20वीं शताब्दी तक, यूरोपीय देशों ने दुनिया के अधिकांश हिस्सों में उपनिवेश स्थापित किए। उपनिवेशों से कच्चे माल, सस्ते श्रम और नए बाजारों तक पहुंच प्राप्त होती थी। उपनिवेशों ने साम्राज्यों को अधिक शक्तिशाली बनाया। कुछ उपनिवेशवादियों का मानना था कि वे स्थानीय लोगों को "सभ्य" बनाकर उनका "उद्धार" कर रहे हैं।

उपनिवेशों का उद्देश्य स्थानीय लोगों का शोषण उनके संसाधनों पर क़ब्ज़ा करना था । उपनिवेशों के द्वारा स्थानीय संस्कृतियों और भाषाओं को दबा दिया गया। उपनिवेशवाद अक्सर हिंसा और संघर्ष का कारण बनता था। उपनिवेशवाद साम्राज्यवाद का एक हिस्सा है। साम्राज्यवाद एक देश द्वारा दूसरे देशों पर राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक रूप से नियंत्रण स्थापित करने की नीति है।

शक्तिशाली यूरोपीय राष्ट्रों ने कमजोर देशों पर कब्जा कर लिया, उनकी अर्थव्यवस्थाओं का शोषण किया और अपनी संस्कृति और भाषाओं को थोपा। इस दमनकारी शासन के खिलाफ, इन परतंत्र देशों में राष्ट्रीय भावनाएं विकसित हुईं, जो स्वतंत्रता और आत्मनिर्णय की तीव्र इच्छा से प्रेरित थीं।

उपनिवेशवाद के दौर में, शिक्षा और आधुनिक विचारों के प्रसार ने लोगों को अपनी संस्कृति, इतिहास और पहचान के बारे में जागरुक होने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने महसूस किया कि वे एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में जीने के योग्य हैं, न कि विदेशी शासकों के अधीन।

यह राष्ट्रीय चेतना स्वतंत्रता आंदोलनों में बदल गई, जिसने पूरे विश्व में उपनिवेशवाद का विरोध किया। इन आंदोलनों में विभिन्न रणनीतियाँ शामिल थीं, जैसे अहिंसक प्रतिरोध, सविनय अवज्ञा, और सशस्त्र विद्रोह।

महात्मा गांधी, नेल्सन मंडेला, हो ची मिन्ह, और मार्टिन लूथर किंग जूनियर जैसे महान नेताओं ने इन आंदोलनों का नेतृत्व किया। उन्होंने प्रेरणादायक भाषण दिए, शांतिपूर्ण मार्चों का आयोजन किया और अन्याय के खिलाफ आवाज उठाई।

इन स्वतंत्रता सेनानियों और उनके समर्थकों ने अकल्पनीय बलिदान और त्याग दिया। उन्हें जेल में डाला गया, प्रताड़ित किया गया, और यहाँ तक कि मार भी दिया गया।

धीरे-धीरे, इन आंदोलनों ने गति पकड़ी और उपनिवेशवादी शक्तियों को कमजोर करना शुरू कर दिया। 20वीं शताब्दी के मध्य तक, अधिकांश उपनिवेश स्वतंत्र हो गए थे।

उपनिवेशवाद और साम्राज्यवाद का विरोध केवल स्वतंत्रता प्राप्त करने तक सीमित नहीं था। इसने सामाजिक न्याय, समानता और मानवाधिकारों के लिए भी लड़ाई लड़ी। इस संघर्ष ने दुनिया को एक अधिक न्यायपूर्ण और शांतिपूर्ण स्थान बनाने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

[1] https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%89%E0%A4%AA%E0%A4%A8%E0%A4%BF%E0%A4%B5%E0%A5%87%E0%A4%B6%E0%A4%B5%E0%A4%BE%E0%A4%A6

बोध प्रश्न - 1

1. किसने लोगों को अपनी संस्कृति, इतिहास और पहचान के बारे में जागरुक होने के लिए प्रेरित किया ?
2. साम्राज्यवाद से आप क्या समझते हैं ?

अभ्यास प्रश्न - 1

1. उपनिवेशवाद का अर्थ एवं उद्देश्य बतलाइए।

   ……..

   ……..

   ……..

   ……..

   ……..

2. उपनिवेशवाद और साम्राज्यवाद के विरोध के क्या कारण थे ?

   ……..

   ……..

   ……..

   ……..

   ……..

12.3 राष्ट्रवाद का उदय

आधुनिक युग में राष्ट्रीय भावनाओं के उदय का द्वितीय कारण था **राष्ट्रवाद का उदय**। 18वीं और 19वीं शताब्दी में, **राष्ट्रवाद** एक शक्तिशाली विचारधारा के रूप में उभरा जिसने दुनिया को बदल दिया। इसने लोगों को एक साझा भाषा, संस्कृति, इतिहास और भविष्य के आधार पर एकजुट होने के लिए प्रेरित किया। राष्ट्रवाद ने राष्ट्रीय भावनाओं को मजबूत करने और राष्ट्रीय पहचान की एक मजबूत भावना को बढ़ावा देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस **राष्ट्रवाद के उदय के कई कारण थे**। जैसे -

- **पुराने व्यवस्था का पतन:** 18वीं शताब्दी में, यूरोप में सामंती व्यवस्था और राजशाही शासन कमजोर पड़ने लगे थे। इनकी जगह लेने के लिए नई राजनीतिक और सामाजिक व्यवस्थाओं की आवश्यकता थी।
- **औद्योगिक क्रांति:** औद्योगिक क्रांति ने समाज में बड़े बदलाव लाए, जिससे लोगों का जीवन और काम करने का तरीका बदल गया। इसने राष्ट्रीय चेतना और एकता की भावना को बढ़ावा दिया।
- **फ्रांसीसी क्रांति:** 1789 की फ्रांसीसी क्रांति ने 'राष्ट्र' और 'राष्ट्रीयता' की अवधारणाओं को लोकप्रिय बनाया। इसने स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व के आदर्शों को भी बढ़ावा दिया, जो राष्ट्रवाद के लिए प्रेरणा बन गए।

- **रोमांटिकवाद:** एक कलात्मक और बौद्धिक आंदोलन था जो 18वीं शताब्दी के अंत में यूरोप में उत्पन्न हुआ था। आंदोलन का उद्देश्य ज्ञानोदय और औद्योगिक क्रांति के दौरान समाज और संस्कृति में व्यक्तिपरकता, कल्पना और प्रकृति की सराहना के महत्त्व की वकालत करना था[2] । 19वीं शताब्दी आते-आते रोमांटिक आंदोलन ने भावनाओं, कल्पना और व्यक्तिगत स्वतंत्रता पर जोर दिया। इसने राष्ट्रीय गौरव और सांस्कृतिक विरासत की भावना को भी बढ़ावा दिया।

राष्ट्रवाद के उदय के इन कारणों का कई दृष्टियों से सम्पूर्ण विश्व पर प्रभाव पड़ा । जैसे -

- **स्वतंत्रता आंदोलन:** राष्ट्रवाद ने दुनिया भर में स्वतंत्रता आंदोलनों को प्रेरित किया, जिसके परिणामस्वरूप कई देशों ने उपनिवेशवाद से स्वतंत्रता हासिल की।
- **राष्ट्र-राज्य का उदय:** राष्ट्रवाद ने राष्ट्र-राज्य के उदय को जन्म दिया, जो एक ऐसा देश है जो एक राष्ट्र के लोगों द्वारा शासित होता है।
- **युद्ध:** राष्ट्रवाद ने 19 वीं शताब्दी के दो विश्व युद्धों सहित कई संघर्षों को भी जन्म दिया।
- **आर्थिक नीतियां:** राष्ट्रवाद ने संरक्षणवाद और आर्थिक राष्ट्रवाद जैसी आर्थिक नीतियों को जन्म दिया।
- **सांस्कृतिक पहचान:** राष्ट्रवाद ने सांस्कृतिक पहचान और राष्ट्रीय गौरव की भावना को मजबूत किया।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि राष्ट्रवाद एक शक्तिशाली विचारधारा है जिसने दुनिया को कई रूपों में प्रभावित किया है। इसने स्वतंत्रता, समानता और आत्मनिर्णय के लिए संघर्ष को प्रेरित किया है, लेकिन इसने संघर्ष और विभाजन को भी जन्म दिया है। राष्ट्रवाद के भविष्य के प्रभावों का अनुमान लगाना मुश्किल है, लेकिन यह निश्चित रूप से आने वाले समय में भी एक महत्त्वपूर्ण शक्ति बना रहेगा।

बोध प्रश्न - 2

1. राष्ट्रवाद के उदय के क्या कारण थे ?
2. रोमांटिकवाद आन्दोलन कहाँ उत्पन्न हुआ ?

अभ्यास प्रश्न - 2

1. राष्ट्रवाद के उदय का सम्पूर्ण विश्व पर क्या प्रभाव पड़ा ?

……..

……..

……..

……..

……..

[2] https://en.wikipedia.org/wiki/Romanticism

12.4 औद्योगिक क्रांति और आधुनिकीकरण

प्रिय विद्यार्थियों ! आधुनिक युग में राष्ट्रीय भावनाओं के उदय का तृतीय कारण था औद्योगिक क्रांति और आधुनिकीकरण । 18वीं और 19वीं शताब्दी में, **औद्योगिक क्रांति** और **आधुनिकीकरण** ने समाज में व्यापक बदलाव लाए, जिनमें राष्ट्रीय भावनाओं का उदय भी शामिल है। इन बदलावों ने लोगों को एक दूसरे से अधिक जुड़ने और राष्ट्रीय स्तर पर सोचने के लिए प्रेरित किया। **औद्योगिक क्रांति के पूरे विश्व पर व्यापक प्रभाव पड़े** । जैसे -

- **शहरीकरण:** औद्योगिक क्रांति के कारण लोग शहरों में जाने लगे, जिससे राष्ट्रीय स्तर पर लोगों का संपर्क और विचारों का आदान-प्रदान बढ़ा।
- **संचार और परिवहन:** रेलवे, टेलीग्राफ और अन्य नए आविष्कारों ने लोगों को तेजी से और आसानी से संवाद करने और यात्रा करने में सक्षम बनाया, जिससे राष्ट्रीय एकता की भावना मजबूत हुई।
- **मीडिया का उदय:** समाचार पत्रों और अन्य मीडिया ने राष्ट्रीय घटनाओं और मुद्दों के बारे में लोगों को जानकारी प्रदान की, जिससे राष्ट्रीय चेतना बढ़ी।
- **राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था:** राष्ट्रीय अर्थव्यवस्थाओं का विकास हुआ, जिससे लोगों में एक साझा आर्थिक हित और राष्ट्रीय गौरव की भावना पैदा हुई।

इसके साथ ही आधुनिकीकरण के भी विश्व पर व्यापक प्रभाव पड़े । जैसे -

- **शिक्षा में सुधार:** शिक्षा में सुधार ने लोगों को राष्ट्रीय इतिहास, संस्कृति और मूल्यों के बारे में जानकारी प्रदान की, जिससे राष्ट्रीय पहचान की भावना मजबूत हुई।
- **सामाजिक सुधार:** सामाजिक सुधारों ने लोगों को समानता और न्याय हेतु लड़ने के लिए प्रेरित किया, जिससे राष्ट्रीय एकता की भावना मजबूत हुई।
- **राजनीतिक सुधार:** राजनीतिक सुधारों ने लोगों को राजनीतिक प्रक्रिया में भाग लेने और राष्ट्रीय मामलों पर अपनी राय व्यक्त करने के लिए प्रेरित किया, जिससे राष्ट्रीय भावनाएं मजबूत हुईं।

इस प्रकार औद्योगिक क्रांति और आधुनिकीकरण ने राष्ट्रीय भावनाओं के उदय में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन बदलावों ने लोगों को एक दूसरे से अधिक जुड़ने, राष्ट्रीय स्तर पर सोचने और राष्ट्रीय पहचान की एक मजबूत भावना विकसित करने के लिए प्रेरित किया।

बोध प्रश्न - 3

1. औद्योगिक क्रांति के पूरे विश्व पर व्यापक प्रभावों को लिखें ।
2. आधुनिकीकरण के विश्व पर व्यापक प्रभावों को लिखें ।

12.5 मीडिया और संचार

आधुनिक मीडिया और संचार के साधनों ने राष्ट्रीय भावनाओं को फैलाने और मजबूत करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। समाचार पत्रों, रेडियो, टेलीविजन, सोशल मीडिया और इंटरनेट जैसे माध्यमों ने लोगों को राष्ट्रीय घटनाओं, मुद्दों और विचारों से अवगत कराकर राष्ट्रीय

चेतना और एकता को बढ़ावा दिया है। **मीडिया और संचार के कुछ महत्त्वपूर्ण प्रभाव है :**

- **जानकारी का प्रसार:** मीडिया राष्ट्रीय स्तर पर समाचार, घटनाओं और मुद्दों के बारे में जानकारी का त्वरित और व्यापक प्रसार प्रदान करता है। यह लोगों को राष्ट्रीय मामलों में शामिल होने और राष्ट्रीय पहचान की भावना विकसित करने के लिए प्रेरित करता है।
- **राष्ट्रीय प्रतीकों और छवियों का निर्माण:** मीडिया राष्ट्रीय ध्वज, गीत, स्मारक और अन्य प्रतीकों को चित्रित करके राष्ट्रीय भावनाओं को मजबूत करने में मदद करता है। ये प्रतीक लोगों को एकजुट करते हैं और राष्ट्रीय गौरव की भावना पैदा करते हैं।
- **राष्ट्रीय नेताओं और नायकों का महिमामंडन:** मीडिया राष्ट्रीय नेताओं, नायकों और प्रेरक व्यक्तियों की कहानियों को साझा करके राष्ट्रीय भावनाओं को प्रेरित करता है। ये कहानियाँ लोगों को राष्ट्र के लिए बलिदान करने और योगदान करने के लिए प्रेरित करती हैं।
- **साझा अनुभवों का निर्माण:** मीडिया खेल आयोजनों, सांस्कृतिक कार्यक्रमों और राष्ट्रीय त्योहारों को प्रसारित करके लोगों को साझा अनुभव प्रदान करता है। ये अनुभव लोगों को एकजुट करते हैं और राष्ट्रीय एकता की भावना को मजबूत करते हैं।
- **सार्वजनिक राय का निर्माण:** मीडिया राष्ट्रीय मुद्दों पर बहस और चर्चा को बढ़ावा देकर सार्वजनिक राय को आकार देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह लोगों को राष्ट्रीय मामलों में भाग लेने और अपनी राय व्यक्त करने के लिए प्रेरित करता है।

अत: आधुनिक मीडिया और संचार राष्ट्रीय भावनाओं के प्रचार प्रसार हेतु एक उपयोगी और शक्तिशाली उपकरण बन गए हैं। इसलिए हम कह सकते हैं कि इन माध्यमों ने लोगों को राष्ट्रीय स्तर पर जोड़ने, राष्ट्रीय चेतना बढ़ाने और राष्ट्रीय गौरव की भावना पैदा करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

अभ्यास प्रश्न - 3

1. किस प्रकार आधुनिक मीडिया और संचार राष्ट्रीय भावनाओं के प्रचार प्रसार हेतु एक उपयोगी और शक्तिशाली उपकरण बन गए हैं ? अपने शब्दों में लिखें।

   ……..

   ……..

   ……..

   ……..

12.6 शिक्षा और सामाजिक सुधार

विद्यार्थियो ! यहाँ आपको ध्यान देना चाहिए कि किस प्रकार आधुनिक युग में, शिक्षा और सामाजिक सुधारों ने राष्ट्रीय भावनाओं को जगाने और मजबूत करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। शिक्षा ने लोगों को अपने देश के इतिहास, संस्कृति और मूल्यों के बारे में जानकारी प्रदान करके राष्ट्रीय पहचान की भावना को मजबूत किया है। सामाजिक सुधारों ने समानता, न्याय और स्वतंत्रता के लिए लड़ाई लड़ी है, जिससे लोगों को एकजुट होने और राष्ट्रीय एकता

की भावना विकसित करने के लिए प्रेरित किया है। **शिक्षा के कारण होने वाले परिवर्तन और प्रभाव हैं:**

- **राष्ट्रीय चेतना:** शिक्षा ने लोगों को अपने देश के इतिहास, संस्कृति, भाषा और भूगोल के बारे में जानकारी प्रदान करके राष्ट्रीय चेतना को बढ़ावा दिया है।
- **राष्ट्रीय पहचान:** शिक्षा ने लोगों को एक साझा राष्ट्रीय पहचान विकसित करने में सहायता की है, जो उन्हें एकजुट करती है और उन्हें एक राष्ट्र के रूप का अहसास कराती है।
- **आलोचनात्मक सोच:** शिक्षा ने लोगों को महत्त्वपूर्ण सोच और विश्लेषणात्मक कौशल विकसित करने में मदद की है, जिससे वे राष्ट्रीय मुद्दों पर अपनी राय बना सकें और उनमें सक्रिय रूप से भाग ले सकें।
- **नागरिक कर्तव्य:** शिक्षा ने लोगों को अपने नागरिक कर्तव्यों और जिम्मेदारियों के विषय में भी जागरुक किया है, जिससे वे राष्ट्रीय विकास में योगदान करने के लिए प्रेरित होते हैं।

सामाजिक सुधारों का देश और समाज पर बहुत ही महत्त्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है, जैसे-

- **समानता और न्याय:** सामाजिक सुधारों ने सभी नागरिकों के लिए समानता और न्याय की लड़ाई लड़ी है, जिससे लोगों को एकजुट होने और एक अधिक न्यायपूर्ण समाज बनाने के लिए प्रेरित किया है।
- **स्वतंत्रता और अधिकार:** सामाजिक सुधारों ने अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, धर्म की स्वतंत्रता और समानता के अधिकारों के लिए लड़ाई लड़ी है, जिससे लोगों को एक अधिक लोकतांत्रिक और स्वतंत्र राष्ट्र बनाने के लिए प्रेरित किया है।
- **सामाजिक एकता:** सामाजिक सुधारों ने जाति, धर्म, लिंग और सामाजिक-आर्थिक स्थिति के आधार पर भेदभाव को कम करने का प्रयास किया है, जिससे राष्ट्रीय एकता और भाईचारे की भावना को बढ़ावा मिला है।
- **सशक्तिकरण:** सामाजिक सुधारों ने हाशिए पर रहने वाले समुदायों और अल्पसंख्यकों को सशक्त बनाने का प्रयास किया है, जिससे उन्हें राष्ट्रीय विकास में समान रूप से भाग लेने का अवसर मिला है।

इस प्रकार शिक्षा और सामाजिक सुधारों ने राष्ट्रीय भावनाओं को जगाने और मजबूत करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। शिक्षा ने लोगों को राष्ट्रीय पहचान और चेतना प्रदान की है, जबकि सामाजिक सुधारों ने समानता, न्याय और स्वतंत्रता के लिए लड़ाई लड़ी है। इन दोनों कारकों ने लोगों को एकजुट होने और एक अधिक शक्तिशाली और समृद्ध राष्ट्र बनाने के लिए प्रेरित किया है।

बोध प्रश्न - 4

1. शिक्षा के कारण होने वाले परिवर्तन और प्रभाव कौन - कौन से हैं ?

अभ्यास प्रश्न - 4

1. सामाजिक सुधारों का देश और समाज पर क्या प्रभाव पड़ा है ? अपने शब्दों में लिखें।

……..

……..

……..

……..

……..

12.7 सारांश

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि आधुनिक युग में राष्ट्रीय भावनाओं का उदय कई कारकों का परिणाम है। उपनिवेशवाद और साम्राज्यवाद का विरोध, राष्ट्रवाद का उदय, औद्योगिक क्रांति और आधुनिकीकरण, मीडिया और संचार, शिक्षा और सामाजिक सुधार इनमें से कुछ प्रमुख कारण हैं। राष्ट्रीय भावनाओं ने दुनिया को कई रूपों में प्रभावित किया है और यह आने वाले समय में भी एक महत्त्वपूर्ण शक्ति बनी रहेगी, ऐसी संभावना है।

छात्रो ! यहाँ यह ध्यान रखना महत्त्वपूर्ण है कि राष्ट्रीय भावनाएँ हमेशा सकारात्मक नहीं होती हैं। राष्ट्रवाद का अंधा भाव कभी-कभी संघर्ष, हिंसा और विभाजन का कारण बन सकता है। इसलिए, यह महत्त्वपूर्ण है कि हम राष्ट्रीय भावनाओं का उपयोग सकारात्मक बदलावों को बढ़ावा देने और एक अधिक न्यायपूर्ण और शांतिपूर्ण दुनिया बनाने के लिए करें।

12. 8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

- भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन का इतिहास (1857 ई. से 1947 ई. तक), डॉ. ए. के. मित्तल, साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा, 2020
- संस्कृत साहित्य में राष्ट्रीय भावना, हरि नारायण दीक्षित, देववाणी परिषद्, नई दिल्ली, 1983
- राष्ट्रभाषा और राष्ट्रीय एकता, रामधारी सिंह 'दिनकर', नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1957.
- राष्ट्रीयता एवं भारतीय साहित्य, डॉ. शशि तिवारी, विद्यानिधि प्रकाशन, दिल्ली, 2019.
- राजनैतिक सिद्धान्त और शासन, डॉ. कृष्णकान्त मिश्र, ग्रन्थ शिल्पी, दिल्ली, 2001.
- राजनीति विज्ञान के सिद्धान्त, डॉ. अनूपचन्द कपूर, प्रीमियर पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1967.
- राजनीति विज्ञान के सिद्धान्त, डॉ. पुखराज जैन, साहित्य भवन, आगरा, 1966.

12.9 बोध/अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न - 1 के उत्तर

1. शिक्षा और आधुनिक विचारों के प्रसार ने
2. साम्राज्यवाद एक देश द्वारा दूसरे देशों पर राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक रूप से नियंत्रण स्थापित करने की नीति है।

अभ्यास प्रश्न - 1 के उत्तर

1. इस प्रश्न का उत्तर अध्येता स्वयं लिखें।
2. इस प्रश्न का उत्तर अध्येता स्वयं लिखें।

बोध प्रश्न - 2 के उत्तर

1. पुराने व्यवस्था का पतन, औद्योगिक क्रांति, फ्रांसीसी क्रांति, रोमांटिकवाद।
2. यूरोप में।

अभ्यास प्रश्न - 2 का उत्तर

1. इस प्रश्न का उत्तर अध्येता स्वयं लिखें।

बोध प्रश्न - 3 के उत्तर

1. शहरीकरण, संचार और परिवहन, मीडिया का उदय, राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था।
2. शिक्षा में सुधार, सामाजिक सुधार, राजनीतिक सुधार।

अभ्यास प्रश्न - 3 का उत्तर

1. इस प्रश्न का उत्तर अध्येता स्वयं लिखें।

बोध प्रश्न - 4 का उत्तर

1. राष्ट्रीय चेतना, राष्ट्रीय पहचान, आलोचनात्मक सोच, नागरिक कर्तव्य।

अभ्यास प्रश्न - 4 का उत्तर

2. इस प्रश्न का उत्तर अध्येता स्वयं लिखें।